विवरण

एड्स - AIDS (एक्वायर्ड इम्युनो-डेफिशियन्सी सीन्ड्रोम) - एक ऐसा रोग जो हमारे प्रतिरक्षा तन्त्र (इम्युन सिस्टम) को कमज़ोर बना देता है जिस की वजह से हम पर कोई भी रोगसंक्रमण आसानी से हो सकता है। यह ह्युमन इम्युनो-डेफिशियन्सी वायरस (एचआइवी - HIV) की वजह से होता है।

एन्टीबायोटीक - एक ऐसी दवा जो बेक्टेरीया (जीवाणु)ओं को मार डालती है या उन्हें बढने से रोकती है। बेक्टेरीया (जीवाणु) से होने वाले रोगों तथा संक्रमणों की रोकथाम में या इ लाज में इस का इस्तेमाल किया जाता है।

बेक्टेरीया (जीवाणु) - बहुत ही छोटे सप्राण जीव जो रोग पैदा कर सकते हैं; उन्हें जर्म्स भी कहते हैं।

बीसीजी - BCG (बेसिलस केमेट-गेरीन) - टीबी का एक ऐसा टीका जो, खास कर बालकों तथा शिशुओं में, टीबी के गंभीर स्वरुपों की रोकथाम करता है।

बायोप्सी - एक ऐसा परीक्षण जिस में रोग के अस्तित्व को जानने के हेतु ऊतक के छोटे से टुकड़े को निकाला जाता है।

ब्रोन्कोस्कोपी - एक ऐसा परीक्षण जिस में रोग के अस्तित्व को जानने के हेतु फेफड़ों का अवलोकन किया जाता है और वहां से ऊतक या प्रवाही को निकाला जाता है; फेफड़ों को अन्दर से देखने के लिये एक पतली सी नली को गले में से अन्दर उतारा जाता है।

छाती का एक्स रे - एक ऐसा परीक्षण जो टीबी के जीवाणुओं ने फेफड़ों को नुकसान पहुंचाया है या नहीं यह देखने के लिये आप की छाती के अन्दर के हिस्से की तस्वीर लेता है।

कोन्टेक्ट - ऐसा इन्सान जिस ने किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बहुत सारा समय बिताया हो जिसे संक्रामक टीबी रोग हुआ हो (जैसे कि परिवारमें से कोई, घर के सदस्यों में से कोई, नज़दीकी दोस्तों में से, साथ में रहने वालों में से, सहाध्यायीओं में से या सहकर्मचारीओं में से कोई)

कंटेजीयस - संक्रामक; जो टीबी के जीवाणुओं को दूसरों में फैला सके।

डॉट - प्रत्यक्ष निरीक्षण चिकित्सा (DIRECTLY OBSERVED THERAPY) - एक ऐसा कार्यक्रम जो सुनिश्चित करता है कि टीबीग्रस्त लोग टीबी के उपचार व रोगमुक्ति के लिये ज़रुरी दवायें लेते हैं।

गेस्ट्रिक वोशिंग्स - एक ऐसा परीक्षण जिस में रोग के अस्तित्व को जानने के हेतु पेट में से प्रवाही निकाला जाता है;एक पतली सी नली को गले में से पेट में उतारा जाता है।

एचआइवी (ह्युमन इम्युनो-डेफिशियन्सी वायरस) - वे वायरस जो एइड्स होने का कारण है।

इम्युन सिस्टम (प्रतिरक्षा तन्त्र) - हमारे शरीर के वे कोषाणु, ऊतक एवं अवयव जो हमें बीमार कर देने वाले बेक्टेरीया, वायरस, परजीवीओं तथा अर्बुद के कोषाणुओं से लडते हैं या उन्हें मार डालते हैं; रोगों एवं संक्रमणों से हमें बचाने के लिये शरीर की यह प्रतिरक्षात्मक व्यवस्था है।

एलटीबीआई (लेटन्ट टीबी इन्फेक्शन - अप्रकट टीबी संक्रमण) - जिसे इनएक्टिव (सुषुप्त) टीबी भी कहते हैं; ऐसी अवस्था जिस में व्यक्ति को टीबी के जीवाणुओं का संक्रमण तो हुआ है, मगर वह अभी टीबी रोग का शिकार नहीं हुआ है। उस में टीबी का कोई लक्षण नहीं होता, वह अपने आप को बीमार महसूस नहीं करता और वह उन जीवाणुओं को दूसरों में फैला नहीं सकता, परन्तु टीबी के त्वचा-परीक्षण में वह आम तौर पर पोज़ीटीव होता है।

इन्ड्युरेशन - शरीर में जिस जगह पर टीबी का त्वचा-परीक्षण हुआ हो उस जगह पर (हो सकने वाली) सूजन और कड़ापन

इन्फेक्शियस - संक्रामक; जो टीबी के जीवाणुओं को दूसरों में फैला सकते हैं।

इग्रा - IGRA (इन्टरफेरोन-गामा रीलिज़ एसे) - लहु का एक ऐसा परीक्षण जो व्यक्ति को टीबी हुआ था या नहीं यह जानने के लिये कभी कभी प्रयोग में लाया जाता है।

मेडीसिन - किसी भी रोग या संक्रमण के उपचार के लिये प्रयोग में लाई जाने वाली दवा

मायकोबेक्टेरियम ट्युबरकयूलोसिस - वे बेक्टेरीया (जीवाणु - जर्म्स) जो लेटन्ट टीबी इन्फेक्शन (अप्रकट टीबी संक्रमण) एवं सक्रिय (एक्टिव) टीबी होने का कारण है।

प्लुरा - फुप्फुसावरण, एक झिल्ली या आवरण जो हर फेफड़े को घेरे हुए रहता है।

रीस्क फेक्टर - कुछ ऐसा तत्व, कारक जो व्यक्ति के रोग या संक्रमण का शिकार होने का ख़तरा बढ़ा देता है।

साइड इफेक्ट (सहगामी दुष्प्रभाव) - किसी दवा या चिकित्सा का अनचाहा परिणाम

स्पुटम - फेफड़ों के अन्दर से, खाँसी के ज़रिये, निकाला गया कफ; जिसे बलग़म भी कहते हैं।

स्पुटम इन्डक्शन - एक विधि जो कोई व्यक्ति, जो अपने आप बलग़म नहीं निकाल सकता, उस से बलगम निकलवाती है। एक नक़ाब के ज़रिये वह साँस में कुहासानुमा हवा लेता है जो खाँसी के ज़रिये उस के फेफड़ों के अन्दर से कफ निकलवाता है।

सिम्प्टम (लक्षण) - टीबीग्रस्त व्यक्ति को अपने शरीर में या शरीर के कार्य में जो बदलाव महसूस होता है।

टीबी रोग - एक रोग जिस में टीबी के बेक्टेरीया (जीवाणु -जर्म्स) पैदा होते हैं और शरीर के कई हिस्सों को नुकसान पहुँचाते हैं तथा व्यक्ति को बीमार कर देते हैं; उसे एक्टिव (सक्रिय) टीबी भी कहते हैं।

टीबी का त्वचा-परीक्षण - इसे ट्युबरकयूलिन स्कीन टेस्ट या मेन्टू टेस्ट भी कहते हैं; व्यक्ति को टीबी के बेक्टेरीया की छूत लगी है या नहीं यह जानने का एक परीक्षण । ट्युबरकयूलिन या पीपीडी नाम का परीक्षण करने वाला प्रवाही हाथ के निचले हिस्से की चमडी के अन्दर डाला जाता है। फिर ४८ से ७२ घंटों के बाद चिकित्सक या नर्स हाथ को देखते हैं और अगर वो जगह सख़्त हो गई हो तो उस का कड़ापन नापते है।